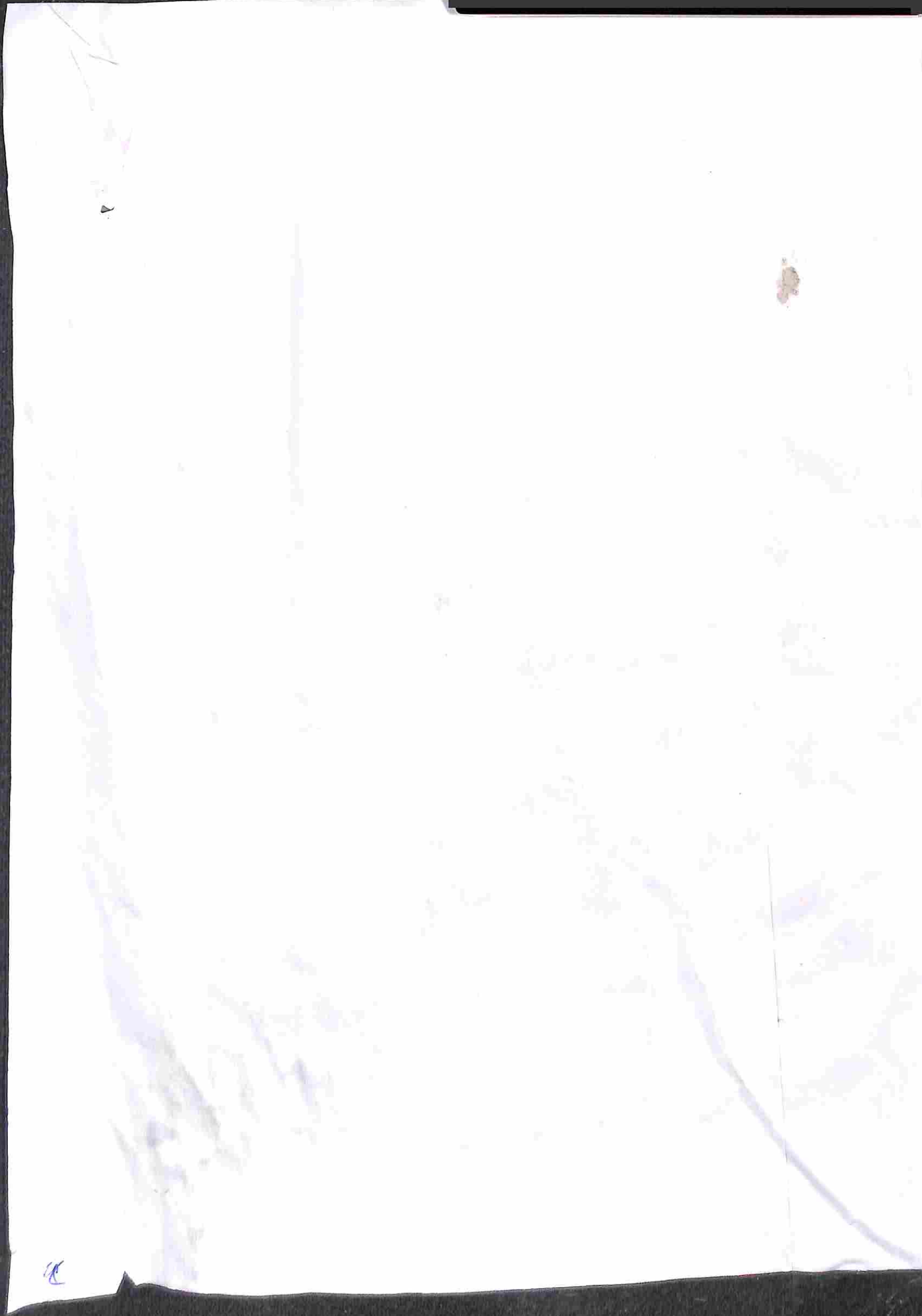




कुल पृष्ठ संख्या - 24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या

2626503



माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर
माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नाट :- परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम - हिन्दी

अंग्रेजी

विषय Sanskrit

परीक्षा का दिन Saturday

दिनांक 8-04-23

नोट :- परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :- (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

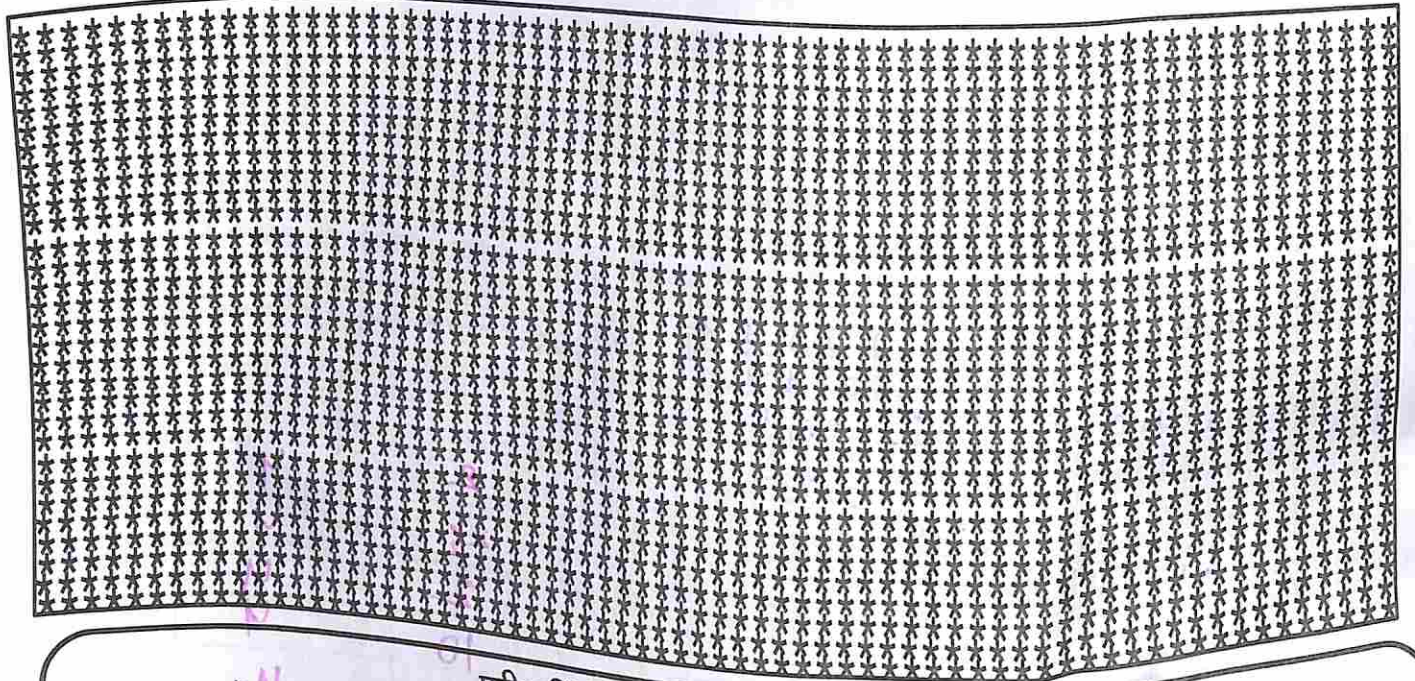
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 1/4 को 16, 17 1/2 को 18, 19 3/4 को 20)

परीक्षक के हस्ताक्षर

संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 1175/2023

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)			
प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	2	19	4
2	2 1/2	20	4
3	2	21	4
4	10	22	4
5	3	23	4
6	3 1/2	24	
7	3	25	
8	3	26	
9	4	27	
10	2	28	
11	6	29	
12	3	30	
13	2	31	
14	2	योग	78
15	2	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	2	अंकों में	शब्दों में
17	3		
18	3	78	अब 12



- परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश**
1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
 2. प्रश्न-पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
 3. प्रश्न-पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटे।
 4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
 - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्तर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
 - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
 - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्युलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
 - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस-पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
 - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें। अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, गणित विषय के लिए रफ कार्य 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। किसी भी प्रकार की उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटे।
 5. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न-पत्र हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।
 6. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न-पत्र हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।
 7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न-पत्र हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड अ

प्रश्न (अ) सद्योदरी

(✓)

(ii) (स) असत्यम्

(✓)

प्रश्न (स) धूम्र + मुञ्चति

(✓)

प्रश्न (अ) अन्तः + जगति

(✓)

(ii) (ब) सद्योदरी (अचुत्वम्)

(✓)

(iv) (द) धिक्त्रात् (लौपः)

(✓)

प्रश्न (ब) न + अव + सीदति

(✓)

प्रश्न (स) निर + अर्चकम्

(✓)

प्रश्न (क) स्वाध्यायः

(✓)

(ii) (अ) भारतीया संस्कृति

(✓)

(iii) (स) भारतीय सभ्यतायाः

(✓)

(iv) (द) साफल्यम्

(✓)

प्रश्न (ख) गीतायां व्यासभावना पूज्यता

(✓)

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(ii) भारतीय संस्कृतिः परैषाम् कल्याणं मनुते,

(iii) (i) भारतीयसभ्यता पुनः परैषाम् उपकाराय
निजस्वाधनि त्यक्तुं प्रेरयति,

(ii) भारतीय संस्कृतिः सर्वथा उपभोगसंस्कृतिः सवनि
योगमेव शिक्षयति, आध्यात्मिकी, भोग स्थाने योगमेव शिक्षयति,

(iv) भारतीय संस्कृतिः

(v) मानव जीवनस्य साक्षात् व्यंग्यं भवितुमर्हति न तु
भोगेन संस्कृति सर्वथा उपभोगसंस्कृतिः सवनि भोगमेव
शिक्षयति, भारतीयसभ्यता पुनः परैषाम् उपकाराय
निजस्वाधनि त्यक्तुं प्रेरयति, वैदिक मध्विमिसा,
बहुकात्म पूर्वमेवत्यामस्य महिमा उद्घोषितः।

प्र. 5 (i) मदान च असौ वृत्तः - कर्मधारय समास

(ii) पित्राकाक्यौ - कण्ड समास

(iii) बहुव्रीहि समास - विमुद्धी यस्य सः

प्र. 6 (i) द्वितीया विभक्तिः विना योगे।

(ii) तृतीया विभक्तिः सङ्गः योगे।

(iii) षष्ठी विभक्तिः समीपे योगे।



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(iv) सप्तरी विभक्ति ~~सप्त~~ 'मम' योगी।

प्र. 7 (i) ~~सप्त~~ कनीय अल्पादरः ~~श्राद्ध~~ कनीय।

1+1+1

3

(ii) मदा + ~~कनीय~~ कनीय + ~~कनीय~~ कनीय + ~~कनीय~~ कनीय + ~~कनीय~~ कनीय + ~~कनीय~~ कनीय जनयति।

(iii) सप्त + ~~कनीय~~ इति तदर्थः।

प्र. 8 (i) वसिकाले सर्वत्र जलोपलवः भवति।

1+1+1

3

(ii) अपि कुरुते मदारजस्य।

(iii) योजनः तत्र दुर्लभः।

प्र. 9 (i) आवाम् यमयो।

1+1+1+1

4

(ii) गुरवे नमः।

(iii) युवां नाम्ने कुरु कुरुयः।

(iv) गुरोः धात्राः ज्ञानं लभन्ते।

प्र. 10 (i) त्रिंशत् अधिक शतम् - 130

1+1

2

(ii) पञ्चचत्वारिंशत् अधिक चतुः शतम् - 445

प्र. 11 (i) चातकः विपासितः मिथते।

6

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(ii) चाठाक्यः मणिकार श्रैष्ठिनं चन्दनवाससम् प्रकुम्भे स्तुति,

५+५+५+५

(v) चौरस्य पादध्वनिना अतिथिः प्रबुद्धः ॥

(iv) आत्मनः श्रेयः कच्छन् नरः अद्वितमं कर्म न कुर्वति,

(आ) (i) दक्षिततरुणां ललितप्रतानां नामा रमणीया,

१+१+१+१

(ii) बुद्धिमत्ता गहनजानने च व्याघ्रं वदति,

(iv) उपनयनोपदेशेन सम्बन्धेन वाग्मीनिः सवकुशयोः गुरुकं

BSER 175/2023

(vi) वसन्तस्य गुणं पिबः वेति,

(ii) कस्मै सुपात्रं चीयते ?

१+१+१+१

(iii) कस्याः द्वे मोमनी ?

(iii) कः तान् अपृच्छत् ?

२

प्र. 3 सङ्गः सुखं सुखं अन्वयः - प्रजानाम् सुखे राज्ञः सुखं अस्ति, प्रजानाम् हितम् राज्ञः हितम् अस्ति, आत्मप्रेमं न राज्ञः हितम्, प्रजानां प्रियं तु राज्ञः हितम् अस्ति।

२

प्र. 4 दंसः श्वेतः वक्रः श्वेतः को श्वेतो वक्रदंसयोः, नीरक्षरविश्रामे तु दंसो दंसः वक्रो वक्रः ॥



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

11) संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता। → last page.
उदये सविता स्वप्न रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा।

प्र. 15 संकेत ⇒ लज्जाममणिं ध्वानम्,

संपर्क ⇒ प्रस्तुत पद्यांश वयम् पाठ्यपुस्तक: 'शैमुषी भाग-2' का
अध्याय शुचिपथविराज् संज्ञकालितो अस्ति।

2) प्रश्ना ⇒ अस्मिन् पद्यांशे नगरस्थ लोमादलं प्रपुष्पणं क
वनि अस्ति, अस्मिन् पाठस्थ लेखक हरिदत्त शर्मा
अस्ति, इयम् पाठ: 'लसत्पत्तिका' नाम ग्रंथात्
संज्ञकालिता अस्ति,

व्याख्या = कवि लज्जामणिं चत नगरस्थ तु शत शकरीयानम्
लज्जाम इव मणिम् धूमं मूञ्चति धावति, अत्र
वाक्पयानमाला ध्वानम् वितरन्ती संधावति, अत्र
श्रुतिः प्रपुष्पणम् अस्ति,

विशेष ⇒ समास प्रयोगः अस्ति ⇒ लज्जाममणिं $\Rightarrow$ लज्जाम इव मणिम्
i) पद्यांशस्थ प्रामा सरलः अस्ति।
ii) संधि प्रयोगः अस्ति $\Rightarrow$ संधावति $\Rightarrow$ बन्ध + धावति।
iii)

प्र. 16 एक बार बुद्धिमती नाम की युवती अपने दो पुत्रों
के साथ किसी काम से पिता के घर जाती है।
रास्ते में जंगल में उसे एक बाघ दिखाई
देता है वह एक उपाय सोचती है और अपने
दोनों पुत्रों को चपेट में लेकर कहती है कि तुम



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

दोनों बाघ खाने के लिए लड़ाई मत करो,
आधा-आधा बाँटकर खा लो, यह सुनकर वह
बाघ वहाँ से भाग जाता है, रास्ते में
उसे एक सियार मिलता है, सियार कहता
है कि तुम मनुष्यों से भी डरते हो, वह
युवती जोरों से बाघ मारने वाली नहीं है, वहाँ
जहाँ है तुम मुझे वहाँ ले चलो।
वह बाघ सियार को लेकर उसी स्थान पर जाता
है, सियार को बाघ के साथ देखकर बुद्धिमती
सब समझती है और सियार से कहती
है कि तुमने पहले तो मुझे तीन बाघ दिये
थे, आज एक बाघ ही क्यों दे रहे हो,
यह सुनकर वह शेर वहाँ से भाग जाता है।
अतः कहा गया है कि बुद्धिमान लोग हर कठिनाई
को पार कर लेते हैं।

प्र. 1 (i) एकः बुभुक्षितः शृङ्गायः भोजनार्थं वने स्ति
इतस्ततः भ्रमति स्म।

(ii) एकस्मिन् स्थाने सः प्राप्तवान् अपश्यत्।

(iii) लभ्यां वहुनि पक्ष्यानि प्राक्पक्ष्यानि आसन्।

(iv) तानि खादितुं सः नैकवारं प्रयासम् अकरोत्।

(v) परं तथापि प्राक्पक्ष्यानि न प्राप्नोत्।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(v) एतानि द्राक्षाफलानि अम्भानि इति लब्धयित्वा कुपितः
शृगापः ततः पलायितः ।

प्र. 18 (i) केशवः शनैः शनैः ~~च~~ लिखति ।

(iv) ~~अ~~ आवाम् पाठशालाः मच्छावः ।

(vi) ते ~~संस्कृतं~~ संस्कृतः वदन्ति ।

प्र. 19 (i) नमस्ते

(ii) कुशलम्

(iii) रक्षाबन्धन दिवसे

(iv) संस्कृत दिवसम्

(v) गीतम्

(vi) भाषणम्

(vii) संस्कृतभाषा

(viii) मेध्यम्

प्र. 20 संकेत $\Rightarrow$ ~~अम्भानि~~
शृगापः

~~अम्भानि~~ शृगापः

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक से संस्कृत के पाठ- 5 जननीतुल्यवत्सला से लिया गया है,

प्रसंग $\Rightarrow$ इस पद्यांश में सुरभि माय को और देवराज इंद्र के मध्य की बातचीत को दर्शाया गया है।

व्याख्या $\Rightarrow$ भूमि पर गिर अपने पुत्र को देखकर सभी गायों की माता सुरभि की आँखों से आँसु निकल आए। सुरभि की इस अवस्था को देखकर देवताओं के राजा इंद्र ने उससे पुछा - "हे प्रिये, क्यों रो रही हो?" सुरभि गाय कहती है - "हे इंद्र! अपने पुत्र की दीन दशा को देखकर मैं रो रही हूँ।"

विशेष $\Rightarrow$ गद्यांश की भाषा सरल है,

(i) इसमें संज्ञा का प्रयोग हुआ है।

(ii) इसमें प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। $\Rightarrow$ सुरभिः

(iii) इसमें वृत्त का प्रयोग हुआ है। $\Rightarrow$ दृष्टवा।

पुं० संकेत $\Rightarrow$ संपत्तौ

तथा।

संदर्भ $\Rightarrow$ प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक श्रेणी भाग 2 के पाठ 6 सुभाषितानि से लिया गया है।

प्रसंग $\Rightarrow$ इस श्लोक में महान् लोभों के गुणों की दक्षिण दर्शाया गया है। इसे बसुन्ध को अस्त और उदय के बारे में भी दर्शाया गया है।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

व्याख्या $\Rightarrow$ महान मोघ संपत्ति और विपत्ति में एक
जैसा स्वरूप रखते हैं, वे कभी बुरे वक्त में
दुखी नहीं होते ना कभी अच्छे वक्त में
ज्यादा खुश होते हैं, जिस प्रकार सूर्य उग्र
होते समय भी लाल होता है और अस्त
होते समय भी लाल ही होता है,

विशेष $\Rightarrow$ (i) शोक की भाषा सदा और सरल है,
(ii) इस शोक में गुण संज्ञा का प्रयोग हुआ है -
महतमैक रूपतः।

(iii) यदा द्वन्द्व समास का प्रयोग हुआ है - संपत्तौ च
विपत्तौ च।

प्र. 20 संकेत $\Rightarrow$ विदुषकः

मुद्रित मात्रा,

अंश $\Rightarrow$ ~~यह~~ पुस्तक ~~जिस~~ हमारी पाठ्यपुस्तक ~~अंश~~ मुषी
के भाग-2 के पृष्ठ - 4 शिशु लालन से लिया गया
है।

प्रसंग $\Rightarrow$ इस नाट्यांश में राम, लव और विदुषक के
मध्य की वार्तालाप को दर्शाया गया है।

व्याख्या $\Rightarrow$ विदुषक $\Rightarrow$ मैं ~~किस~~ फिर से पुछता हूँ क्या
नाम है तुम दोनों की माता का?

लव $\Rightarrow$ उनके दो नाम हैं।



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		विदूषक = किस प्रकार से ?
		लव = तपोवनवासी उन्हें देवी, इस नाम से बुलाते हैं, और भक्त भगवान वाल्मीकि उन्हें लव, लवण्डर बुलाते हैं।
		राम = इसके अंशों की भी कोई नाम है। भगवत् ।
		विशेष = नाट्यांश की भाषा सरल है, न - वयस्क ।
		(ii) कारक विभक्तियों का प्रयोग हुआ है - वयस्क ।
		(iii) दीर्घ संज्ञा का प्रयोग हुआ है - देवीति ।
		प्रश्न (i) नमो नमः
		(ii) लघु
		(iii) स्वास्वत् पुशमी
		(iv) जन्मदिनम्
		(v) आगमिवधामि
		(vi) भवतः
		(vii) रवास्वत्
		(viii) मिमावः

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

प्र. 14. (1) गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्मुक्तो,
वत्सी वत्सं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः,
पितृः वसन्तस्य गुणं न वाचसः,
करी च सिद्धस्य वत्सं न मुषणः,

समाप्त

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSEER-175/2023



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

MSER-179/2023



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

DSER-175/2023



परीक्षक द्वारा प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER 17/5/2023



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

USER-17572023

[illegible]



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक परीक्षण संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-175/2023

[illegible]



रफ कार्य

22

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	११	मेधाविधाः २। ५। मनावि ओः औ
		करीति कुरुतः कुर्वन्ति अकरोत् अकुरुताम् अकुर्वन् करीवि कुरुयः कुरुय अकरोः अकुरुताम् अकुरुन्ति करोमि कुर्वः कुर्मः अकरोम अकुर्व जकुर्म करीतु कुरुताम् कुर्वन्तु कुर्यात् कुर्यावि कुर्युः कुरु कुरुताम् करोत कुर्याः कुर्यावि कुर्याति कुर्यामि कुर्यावि कुर्यामि कुर्यावि कुर्यामि
		काणः कृणाः पिणः कृणाः कौ भेदः पिणकाकर्मः कसन्तसमर्थे पूदाने तु कृणः काणः काणः पिणः पिणः
		हंसः श्वेतः वणः श्वेतः कौ भेदो वणहंसयो नीक्षीयविभागे तु वणो वणहंसः हंसो हंसः वणो वणः
		संपत्तौ च विपत्तौ च महता मेघ-पट्टा उदये सपिता रक्तौ रक्तरीचारात्मके लयः।

